तुम्हीं सो गए दास्तां कहते-कहते

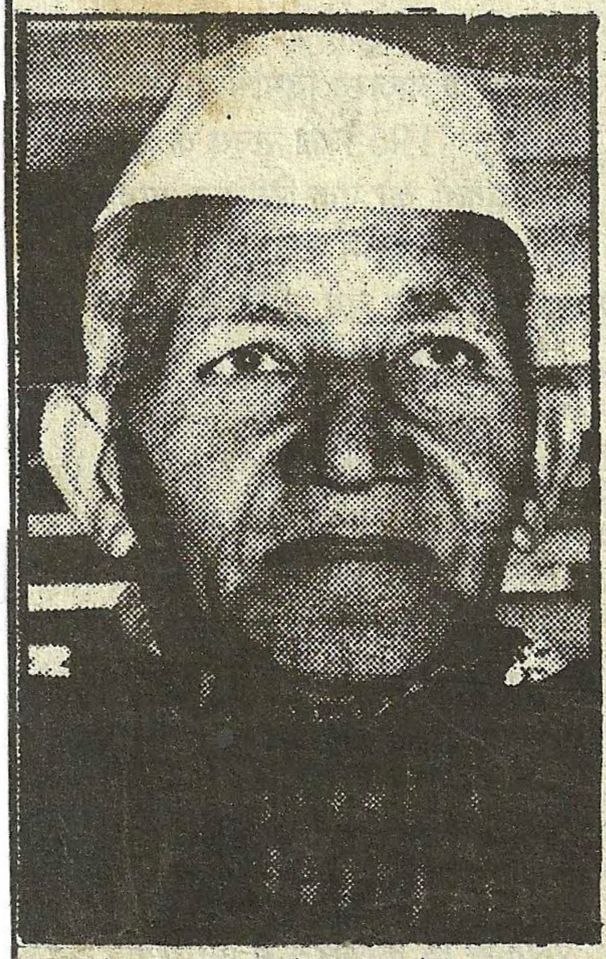

'मेरे अधूरे स्वप्नों में एक अधूरा स्वप्न यह है कि हरियाणा की सर ज़मीन से कोई कामयाब दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हो। यदि तुम अपने इस प्रयास में सफल होते हो तो उस स्थिति में अधिकतम प्रसन्नता मुझे होगी। मेरा पूरा–पूरा सहयोग आपके साथ होगा। परमेश्वर करें, आप अपने इस सदुद्देश्य में सफल हों।'

उपरोक्त पंक्तियां के स्वतंत्रता सेनानी, पूर्व सांसद, पूर्व मंत्री एवं समाजसेवी स्व. मूलचंद जैन के उस पत्र की हैं जो उन्होंने गत 7 जुलाई 1997 को **'हरि भूमि'** के स्वत्वाधिकारी कैप्टन (सेवानिवृत्त) अभिमन्यु को लिखा था। उपरोक्त पंक्तियों से जाहिर है, स्व. बाबू जी हरियाणा की भूमि से एक सफल हिंदी दैनिक पत्र का श्रीगणेश देखने के लिए कितने लालायित थे।

हरि भूमि साप्ताहिक का प्रकाशन उनके जीवनकाल में प्रारंभ हो चुका था। 'हरि भूमि' को दैनिक के रूप में पेश करने की तैयारियां जोर–शोर से जारी हैं और निकट भविष्य में ही यह अपने नूतन कलेवर के साथ जन मंच पर उपस्थित होगा। लेकिन अफसोस ! उस दिन को देखने के लिए अब हमारे बीच वह श्रद्धेय पुरुष बाबू मूलचंद जैन नहीं होंगे। काश ! क्रूर नियति वह दिन देखने के लिए कुछ जीवन दान उन्हें दे देती और वह अपने अधूरे स्वप्नों में से एक प्रमुख स्वप्न को पूरा होता देख पाते। शायद नियति को यह स्वीकार न था और वह उन्हें छीन ले गयी।

downloaded from moolchandjain.org

स्व. मूलचंद जैन के बारे में व्यर्थ के तुक्के मारना सूर्य को मोमबत्ती दिखाने जैसी बात होगी। अपने विद्यार्थी जीवन से लेकर जीवन के अंतिम श्वास तक उन्होंने जो भी किया, सोचा, सर्वथा देश–प्रदेश हित में किया। उन्होंने निजी स्वार्थों को बियासी वर्षों की दीर्घायु के दौरान कभी भी सार्वजनिक हितों पर हावी नहीं होने दिया। आज के स्वार्थी, भ्रष्टाचार के कीचड़ में सने दौर में खुद को बेदाग बनाये रखना कोई मामूली बात नहीं।

जिला सोनीपत के गांव सिकंदरपुर माजरा में 20 अगस्त, 1915 के दिन लाला मुरारी लाल जैन के यहां इनका जन्म हुआ। मां का नाम श्रीमती धनकौर था। प्रारंभिक शिक्षा गांव में हुई। बाकी शिक्षा रोहतक व लाहौर में पूरी की। उनकी जीवन यात्रा के अनेक पड़ाव रहे। सफल वकील, दमदार स्वतंत्रता सेनानी, विधायक, मंत्री व सांसद आदि–आदि। आजादी के लिए की गयी जद्दोजहद में भी कई बार जेल काटी और देश में आपात् स्थिति की घोषणा होने पर भी जेल गये। लेकिन देश–प्रदेश की जनता के हितों को हमेशा वरीयता दी। इसलिए हर खास व आम आदमी उनकी बात की कद्र करता था, उनके प्रति श्रद्धा रखता था। उनके देहांत पर यह बात रह–रहकर जुबान पर आती है कि–

"जमाना बड़े गौर से सुन रहा था–
तुम्हीं सो गये दास्तां कहते-कहते।"

समग्र 'हरि भूमि' परिवार, श्रद्धेय व्यक्तित्व के धनी स्व. बाबू मूलचंद जैन के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

–डी. ए.वी. अनूप